श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, नैनागिरि, जिला–छतरपुर (म.प्र.)

ISSN 2454 - 5163

प्रकाशन तिथि : 26 मई 2019, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 37, अंक 11, कुल पृष्ठ 28

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

वीतराग-विज्ञान (430)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com
ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	10200

आत्मा की कर्मशक्ति

जड़ में या विकार में ऐसी शक्ति नहीं है कि वह निर्मल पर्याय को अपने कर्मरूप से उत्पन्न कर सके। निर्मल पर्याय में भी ऐसी शक्ति नहीं है कि वह अन्य निर्मल पर्याय को अपने कर्मरूप से उत्पन्न कर सके। पूर्व पर्याय को कारण कहा जाता है वह तो उपचार से है, सचमुच उसका तो अभाव हो जाता है, इसलिये वह अन्य पर्याय का कारण नहीं है, किन्तु पूर्व पर्याय में भी वर्तता हुआ अखण्ड द्रव्य ही स्वयं परिणमित होकर दूसरे समय में दूसरी पर्याय को कर्मरूप से प्राप्त करता है - स्वयं ही अभेदरूप से उस कर्मरूप होता है; इसप्रकार निर्मल पर्यायरूप कर्म करने की शक्ति द्रव्य में ही है; द्रव्य में ही शुद्धता का भण्डार भरा है; उसी के आश्रय से शुद्धता होती है। उसका आश्रय न करे और निमित्तादि का आश्रय करके शुद्धता होना माने तो वह जीव अपनी आत्मशक्ति को न माननेवाला मिथ्यादृष्टि है।

स्वभाव शक्ति के आश्रय से ही निर्मलता होती है अर्थात् निश्चय के आश्रय से ही धर्म होता है और व्यवहार के आश्रय से धर्म नहीं होता - ऐसा अनेकान्त नियम इसमें आ जाता है। .....

- आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 499-500

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 37 (वीर नि. संवत् - 2545) 430 अंक : 11

हम लागे आतमराम सौं...

हम लागे आतमराम सौं ।। टेक।।
विनाशीक पुदगल की छाया, कौन रमे धन-धाम सौं।।
हम लागे आतमराम ...।।1।।
समता सुख घट में परकास्यो, कौन काज है काम सौं।
दुविधा भाव जलांजुलि दीनों, मेल भयौ निजस्वामि सौं।।
हम लागे आतमराम ...।।2।।
भेदज्ञान करि निज-पर देख्यो, कौन विलोके चाम सौं।।
उरे-परे की बात न भावे, लौ लाई गुण-ग्राम सौं।।
हम लागे आतमराम ...।।3।।
विकलप भाव रंक सब भाजे, झरि चेतन अभिराम सौं।।
'द्यानत' आतम अनुभव करके, छूटे भवदु:ख-धाम सौं।।
हम लागे आतमराम ...।।4।।

- कविवर पण्डित द्यानतरायजी

मुक्त विद्यापीठ के छात्रों हेतु सूचना

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) के **प्रथम सेमेस्टर की परीक्षायें जून 2019 के अंतिम सप्ताह में होने जा रही है।** परीक्षा के एक सप्ताह पूर्व (लगभग 25 जून तक) सभी परीक्षार्थियों को एनरोलमेंट नम्बर व प्रश्नपत्र भेज दिए जावेंगे। जिन परीक्षार्थियों ने अभी भी परीक्षा की तैयारी शुरु नहीं की है, वे शीघ्र तैयारी में जुट जावें।

परीक्षा कार्यक्रम निम्नानुसार है -

परीक्षा कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा (प्रथम सेमेस्टर)

प्रथम वर्ष (उपाध्याय कनिष्ठ)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग-1
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : छहढाला (70 अंक)+सत्य की खोज (30 अंक)

द्वितीय वर्ष (उपाध्याय वरिष्ठ)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा (प्रथम सेमेस्टर)

प्रथम वर्ष -

1. प्रथम प्रश्नपत्र : गुणस्थान विवेचन
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : क्रमबद्धपर्याय (70 अंक) + सामान्य श्रावकाचार (30 अंक)

द्वितीय वर्ष -

1. प्रथम प्रश्नपत्र : समयसार-पूर्वरंग और जीवाजीवाधिकार
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : गोम्मटसार कर्मकाण्ड -प्रथम अध्याय

तृतीय वर्ष -

1. प्रथम प्रश्नपत्र : समयसार-कर्ताकर्माधिकार
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : गोम्मटसार जीवकाण्ड-गाथा 70 से 215 तक (97 से 112 गाथा छोड़कर)

ध्यान रहे - परीक्षा बोर्ड कार्यालय से जानकारी चाहने हेतु परीक्षार्थी अपना एनरोलमेंट नम्बर का उल्लेख अवश्य करें; ताकि आपके द्वारा चाही गई जानकारी शीघ्र मिल सके।

- नीशू शास्त्री (प्रबंधक) 9785645793

सम्पादकीय

योगसार अनुशीलन

पृष्ठभूमि

योगिराज श्री योगीन्दुदेव कृत योगसार विशुद्ध आध्यात्मिक ग्रन्थ है। सम्पूर्ण ग्रन्थ पर आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

ग्रन्थाधिराज समयसार के समान इस ग्रन्थ में भी **शुद्ध, बुद्ध, निरंजन, निराकार, एक ज्ञायकस्वभावी निज भगवान आत्मा के ही गीत गाये गये हैं, उसका ही स्वरूप स्पष्ट किया गया है।**

अभी मेरे सामने ब्र. शीतलप्रसादजी कृत हिन्दी टीका और आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का **योगसार प्रवचन** प्रस्तुत है।

मैं इस अनुशीलन में उक्त दोनों ग्रन्थों का भरपूर उपयोग करूँगा।

उक्त दोनों ग्रन्थ उपलब्ध होने से यद्यपि इस अनुशीलन की कोई विशेष आवश्यकता नहीं रह जाती है; तथापि मैं यह कार्य अपनी रुचि के पोषण के लिये ही कर रहा हूँ, अपने उपयोग की शुद्धि के लिये ही कर रहा हूँ।

यदि इससे अन्य मुमुक्षु भाई-बहिनों को भी कुछ लाभ हो जाय तो ठीक है; अन्यथा मैं तो इस ढलती उम्र में इसका लाभ लूँगा ही।

इस ग्रन्थ में अपभ्रंश भाषा में लिखे गये १०८ दोहे हैं; जिन्हें अपभ्रंश भाषा में दूहा कहा जाता है।

आरंभ के दो दोहों में मंगलाचरण हैं; जिनमें सिद्ध और अरंहत भगवान को नमस्कार किया गया है।

योगसार दोहा १-२

मंगलाचरण के दोहे इसप्रकार हैं -

णिम्मलझाणपरिट्ठिया कम्मकलंक डहेवि।
अप्पा लद्धउ जेण परु ते परमप्प णवेवि।। १ ।।

घाइचउक्कहँ किउ विलउ णंत-चउक्क-पदिट्ठु।
तहिं जिणइंदहँ पय णविवि अक्खमि कव्वु सुइट्ठु।। २ ।।

(हरिगीत)

सब कर्ममल का नाशकर अर प्राप्त कर निज-आतमा।
जो लीन निर्मल ध्यान में नमकर निकल परमातमा।। १ ।।

सब नाशकर घनघाति अरि अरिहंत पद को पा लिया।
कर नमन उन जिनदेव को यह काव्यपथ अपना लिया।। २ ।।

निर्मल ध्यान में स्थित होकर जिन्होंने कर्मकलंक को जड़मूल से नष्ट कर दिया है, कर्ममल को धो डाला है, कर्म ईंधन को जला दिया है और उत्कृष्ट आत्मा को पा लिया है; मैं उन सिद्ध परमात्मा को नमस्कार करता हूँ।

जिन्होंने चार घातिया कर्मों का क्षय करके अनन्त चतुष्टय अर्थात् अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य प्राप्त किये हैं; उन अरहंत जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार करके सुन्दर काव्य को कहता (लिखता) हूँ।

इस मंगलाचरण में सबसे पहले प्रथम दोहे में आठों कर्मों का नाश करने वाले सिद्ध भगवान को; और उसके बाद दूसरे दोहे में चार घातिया कर्मों का नाश करने वाले अरहंत भगवान को नमस्कार किया गया है।

देह रहित सिद्ध परमात्मा को निकल परमात्मा और देह सहित अरहंत परमात्मा को सकल परमात्मा कहते हैं।

उक्त मंगलाचरण में पंच परमेष्ठियों में से परमात्म पद को प्राप्त

वीतरागी-सर्वज्ञ अरहंत-सिद्ध - मात्र इन दो परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है।

यद्यपि णमोकार महामंत्र में अरहंत परमात्मा को, दिव्यध्वनि द्वारा साक्षात् उपकारी होने से पहले रखा गया है; तथापि **यहाँ पूर्णता को प्राप्त सिद्ध भगवान को ही पहले रखा गया है।**

अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य - इन चार अनन्त चतुष्टय के धारी तो अरहंत एवं सिद्ध - दोनों ही हैं।

पंच परमेष्ठियों की गणना के समय पहला नम्बर अरहंत परमेष्ठी को ही दिया जाता है। दिव्यध्वनि द्वारा होने वाले उपकार को ही इसमें एकमात्र कारण बताया जाता है। **सबकी जबान पर भी अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और सर्व साधु - यही क्रम चढ़ा हुआ है।**

यह नहीं कहा जा सकता है कि णमोकार मंत्र के कारण यह क्रम चल पड़ा है या फिर पहले से ही यह क्रम प्रचलित था और उसके प्रभाव से णमोकार मंत्र में यह क्रम आया है।

जो भी हो; पर यहाँ **योगीन्दुदेव ने मंगलाचरण में सिद्ध भगवान को ही प्रथम स्थान दिया है।**

समयसार के मंगलाचरण में तो मात्र सिद्धों को ही नमस्कार किया है; पर प्रवचनसार के मंगलाचरण में पंचपरमेष्ठियों को नमस्कार किया है। उसमें प्रथम गाथा में तो अरहंत अवस्था को प्राप्त वर्द्धमान भगवान को नमस्कार किया गया है; उसके बाद की गाथाओं में शेष अरहंतों के साथ सिद्धों, आचार्यों, उपाध्यायों और सर्वसाधुओं को नमस्कार किया है।

प्रवचनसार की चौथी गाथा में तो अत्यन्त स्पष्ट रूप से अरहंतों के बाद सिद्धों को रखा है।

गाथा मूलतः इसप्रकार है -

किच्चा अरहंताणं सिद्धाणं तह णमो गणहराणं।
अज्झावयवग्गाणं साहूणं चेव सव्वेसिं।। ४ ।।

(हरिगीत)

अरहंत सिद्धसमूह गणधरदेवयुत सब सूरिगण।
अर सभी पाठक साधुगण इन सभी को करके नमन।। ४ ।।

इसप्रकार अरहंतों, सिद्धों, गणधरादि आचार्यों, उपाध्यायों और सर्व साधुओं को नमस्कार करके....।

आचार्य कुन्दकुन्ददेव जहाँ भी पंचपरमेष्ठी को याद करते हैं; वहाँ वे अरहंत को सबसे पहले याद करते हैं।

अष्टपाहुड़ में मोक्षपाहुड़ १०४वीं गाथा के रूप में इसप्रकार स्मरण करते हैं –

अरूहा सिद्धायरिया उज्झाया साहु पंच परमेठ्ठी।
ते वि हु चिट्ठहि आदे तम्हा आदा हु मे सरणं।। १०४ ।।

(हरिगीत)

अरहंत सिद्धाचार्य पाठक साधु हैं परमेष्ठि पण।
सब आतमा की अवस्थाएँ आतमा ही है शरण।। १०४ ।।

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु – ये पंच परमेष्ठी भगवान आत्मा की ही अवस्थाएँ हैं; इसलिए **मेरे लिए तो एक भगवान आत्मा ही शरण है।**

ये सब कुछ स्पष्ट होने पर भी मुनिराज योगीन्दु को तो सिद्ध के बाद अरहंतवाला क्रम ही इष्ट है। वे परमात्मप्रकाश के मंगलाचरण में आरंभ की अनेक गाथाओं में लगातार सिद्धों को स्मरण करते हैं।

आरंभ की पाँच गाथाओं में लगातार सिद्धों की ही वंदना की गई है। उसके बाद जिनवर अरहंतों को याद किया है।

इससे पता चलता है कि वे परिपूर्णता को महत्व देकर सिद्धों को ही

बुद्धिपूर्वक सोच समझकर प्रथम स्थान देते हैं।

ब्र. शीतलप्रसादजी ऐसे विभिन्न आचार्यों द्वारा लिखे गये अनेक ग्रन्थों के मंगलाचरण उद्धृत करते हैं; जिन्होंने मंगलाचरण में मात्र सिद्ध भगवान को ही नमस्कार किया है।

आत्मा की सम्पूर्ण संयोगों से रहित पूर्ण विकसित पर्याय तो सिद्ध पर्याय ही है। दूसरे सिद्धपर्याय इसी रूप में अनन्त काल तक रहने वाली है।

अरहंत अवस्था में तो देह के साथ समवशरण रूप विभूति व चार अघातिया कर्म भी विद्यमान हैं और अरहंत अवस्था अनन्त काल तक रहने वाली भी नहीं है।

अतः हमारा आदर्श तो सिद्ध अवस्था ही हो सकती है, अरहंत अवस्था नहीं। योगनिरोध के बाद तो सिद्ध अवस्था ही होती है, अरहंत अवस्था नहीं। अरहंत अवस्था में तो योग सक्रिय रहता है और तत्सबंधी ईर्यापथ आस्रव भी होता है।

अतः योग का सार तो योगों का निरोध ही हो सकता है। अतः योग निरोध से प्राप्त होने वाली सिद्ध अवस्था ही पूर्णतः उपादेय है, आदर्श है। अतः योगसार के मंगलाचरण में सर्वप्रथम सिद्ध भगवान का स्मरण न्यायसंगत ही है।

इतना कुछ स्पष्ट होने पर भी इस योगसार की हिन्दी भाषा में टीका करने वाले ब्र. शीतलप्रसादजी इस टीका के मंगलाचरण में स्वयं पहले अरहंत भगवान को स्मरण करते हैं; जो इसप्रकार है –

ज्ञान दर्श सुख वीर्यमय, परमातम सशरीर।
अर्हत् वक्ता आप्त नमि, पहुचूँ भवदधितीर।। १ ।।

सिद्ध शुद्ध अशरीर प्रभु, वीतराग विज्ञान।
नित्य मगन निज रूप में, वंदहुँ सुख की खान।। २।।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजी स्वामी के निम्नांकित कथन से भी इसी भावना का पोषण होता है।

उनका कथन मूलतः इसप्रकार है -

''प्रत्येक आत्मा शुद्ध चिदानन्द मूर्ति सिद्ध परमात्मा के समान ही है। उसकी श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र द्वारा सार अर्थात् सिद्ध दशा प्राप्त करना, उसे योगसार कहते हैं।

मुनिराज श्री योगीन्दु देव महान संत हुये हैं। उन्होंने योगसार ग्रन्थ का प्रारंभ करते ही मंगल रूप में सिद्ध परमात्मा को स्मरण किया है।

प्रत्येक आत्मा को सर्वज्ञ देव ने सिद्ध समान ही देखा है।

शुद्ध चिदानन्द स्वरूप आत्मा में एकाग्रता ही निर्मल ध्यान है। निर्मल ध्यान से ही मोक्षमार्ग प्रारंभ होता है और अन्त में सिद्ध दशा प्राप्त होती है।[१]

भगवान आत्मा शक्तिपने परमात्मा तो था ही, उसका ध्यान करके वर्तमान पर्याय में भी सिद्ध पद को प्राप्त किया। ऐसे परमात्मा को पहिचान कर, अपने लक्ष में लेकर मैं सिद्ध परमात्मा को नमस्कार करता हूँ।

समयसार में कहा है कि सिद्ध परमात्मा को कौन नमस्कार कर सकता है?

जिसने अपने हृदय में, श्रद्धा-ज्ञान में - 'विकार आदि मेरे में नहीं हैं। **मैं पूर्णानन्द सिद्ध समान शक्ति रूप से हूँ' - इसप्रकार सिद्धों को स्थापित किया है, वही सिद्धों को वास्तविक नमस्कार कर सकता है।**[२]

अन्य सबको भूलकर सिद्धों को याद किया, मानों अकेले सिद्ध ही नजरों में झूल रहे हों। रागादि कोई भी नमने लायक चीज नहीं है।

नमने लायक तो अनन्त सिद्धों का समूह अर्थात् सिद्ध पर्याय ही है; ऐसी जिसकी अन्तर दृष्टि हुई है, वही अनन्त सिद्धों को अपने ज्ञान में पधराता है।

१. योगसार प्रवचन पृष्ठ-२ २. वही, पृष्ठ-३ **(क्रमशः)**

छहढाला प्रवचन

संसार भावना

चहुँगति दुःख जीव भरे हैं, परिवर्तन पंच करे हैं।
सब विधि संसार असारा, यामें सुख नाहिं लगारा।।५।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की पांचवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

यह जीव अज्ञान के कारण संसार में चारों गतियों में दुःख भोगता हुआ पाँच परावर्तन पूरा करता है। यह संसार सर्वथा असार है, इसमें बिल्कुल सुख नहीं है। इसप्रकार संसार के स्वरूप का चिन्तवन करके अपने सुखस्वभाव में परिणामों को विशेष एकाग्र करना संसारभावना का फल है।

संसार में नरक, तिर्यंय, मनुष्य तथा देव - इन चारों गतियों में भ्रमण करते हुए जीव कैसे-कैसे दुःख सहन करता है, उसका अत्यंत करुण वर्णन पहली ढाल में आ चुका है। उन दुःखों को याद करके मुनिराज संसार से विरक्त होते हैं।

देखो ! चारों गतियों में दुःख ही बताया है; देवगति में भी दुःख है; क्योंकि वहाँ जीवों को मिथ्यात्वादि परभावों का दुःख है। सुख-दुःख संयोग में नहीं; अपितु जीव के भाव में होते हैं, सुख आत्मा का स्वभाव है; अतः आत्मस्वभाव की अनुभूति के बिना सुख कैसे हो सकता है ? देवगति के बाह्य विषयों में बिल्कुल सुख नहीं है। इसीप्रकार मनुष्यगति में भी धन तथा मान आदि की प्राप्ति होने पर भी इनमें बिल्कुल सुख नहीं है; अपितु यह जीव उनके लक्ष्य से आकुलता करके दुःखी होता है। आत्मा

के लक्ष्य से उसका वेदन होना ही सच्चा सुख है, वह सुख विषयातीत है, उसके लिए किसी बाह्य पदार्थ की जरूरत नहीं है, ऐसा अतीन्द्रिय विषयातीत परिपूर्ण सुख अरहंत और सिद्ध भगवान को होता है। साधक जीवों को भी आंशिक रूप से अतीन्द्रिय सुख होता है। यद्यपि वह सुख थोड़ा है; परन्तु सिद्धों के सुख जैसा ही है।

मिथ्यात्व सहित शुभ-अशुभ कषायचक्र से यह जीव पाँच परावर्तन करता हुआ दुखी होता है। पंचपरावर्तन में देवगति के भव तथा इस जाति का शुभराग भी शामिल है। एक-एक भवपरावर्तन में नरकगति के अनेक भव होते हैं तथा उसकी अपेक्षा असंख्यातगुणे अर्थात् अनन्त देवगति के भव में ग्रैवेयक पर्यन्त भव होते हैं, मनुष्यगति के भव सबसे कम होते हैं; फिर भी वे अनन्त हैं। संसार की व्यवहार राशि में रखड़ता हुआ यह जीव चारों गतियों में जो भव-भ्रमण करता है; यहाँ तो उसकी बात कही है, जबकि निश्चय राशि में (नित्य निगोद) तो अनन्तानन्त निगोदिया जीव ऐसे हैं, जिन्होंने निगोद की एकेन्द्रिय पर्याय के अलावा दूसरे कोई भव अभी तक धारण ही नहीं किये तथा करेंगे भी नहीं। यहाँ पर तो निगोद से बाहर निकलकर चारों गति में परिभ्रमण करनेवाले जीवों की बात कही है। बड़ी कठिनता से निगोद में रहनेवाले जीवों के दु:ख की क्या बात करें? अरे ! जिसप्रकार सिद्ध भगवान का सुख वचनातीत है; उसीप्रकार निगोद का दु:ख वचनातीत है।

पण्डित दौलतरामजी कहते हैं 'सब विधि संसार असारा' विधि अर्थात् चारों गति में सभीप्रकार से यह संसार असार है, इसमें जरा भी सुख नहीं है। जबकि आत्मा का सुखस्वभाव है, सबप्रकार से सारभूत है। आत्मा अपार सुख से भरपूर है तथा उसमें किंचित् दु:ख नहीं है।

संसार में मिथ्यादृष्टि के योग्य जो कोई द्रव्य (कर्म-नोकर्म) क्षेत्र, काल,

भव और भाव हैं, अज्ञानी उन सभी को क्रमश: दु:खपूर्वक भोगता हुआ पूर्ण करता है। सम्यग्दर्शन होने के बाद किसी जीव को एक भी परावर्तन पूरा नहीं होता है, संसार के पंचपरावर्तनों से वह छूट जाता है।

मिथ्यादृष्टि जीव निगोद से लेकर नवमें ग्रैवेयक तक के भवों में रुल-रुलकर दु:ख के वेदनपूर्वक पाँच प्रकार के परावर्तन पूरा करता है। इसप्रकार यह जीव अनन्तबार पंचपरावर्तन पूरा कर चुका है। जब यह जीव सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है, तभी इनसे छूटता है।

शास्त्रों में पंचपरावर्तन का बहुत विस्तार से वर्णन है; परन्तु यहाँ संक्षेप में कहते हैं –

१. मिथ्यादृष्टि द्वारा ग्रहण करने योग्य कर्म-नोकर्म के सभी पुद्गलों को ग्रहण करने और छोड़ने पर एक द्रव्यपरावर्तन पूरा होता है। यह परावर्तन भी जीव ने अनन्तबार किया है।

२. लोक के मध्य के ८ प्रदेशों में अपने आत्मा के ८ रूचक प्रदेश रखकर जीव जन्म लेवे, फिर एक-एक प्रदेश अधिक अवगाहना से पुन: वहाँ उत्पन्न हो, इस क्रम से सम्पूर्ण लोक के शून्य क्षेत्र से उपजे और मरे तब एक क्षेत्रपरावर्तन पूरा होता है। ऐसा क्षेत्रपरावर्तन भी जीव ने अनन्त बार किया है।

३. यह जीव अवसर्पिणी काल के प्रथम समय में उपजे, फिर बीच के अन्य समय में होनेवाले जन्म को शामिल न करते हुए पुनः अवसर्पणीकाल के दूसरे समय में उत्पन्न हो, फिर लम्बे काल तक भ्रमण करते हुए तीसरे समय में उत्पन्न हो, इसीप्रकार एक-एक समय में अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी के सभी समूहों को पूरा करे, तब एक कालपरावर्तन पूरा होता है। ऐसा कालपरावर्तन भी यह जीव अनन्त बार कर चुका है।

(क्रमश:)

नियमसार प्रवचन –

निःशल्य भाव वाला प्रतिक्रमणमय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ८७ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

मोत्तूण सल्लभावं णिस्सल्ले जो दु साहु परिणमदि।
सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ।।८७ ।।

(हरिगीत)

छोड़कर त्रिशल्य जो नि:शल्य होकर परिणमे।
प्रतिक्रमणमय है इसलिए वह स्वयं ही प्रतिक्रमण है।।८७।।

जो साधु शल्यभाव को छोड़कर नि:शल्यभाव से परिणमित होता है, उस साधु को प्रतिक्रमण कहा जाता है; क्योंकि वह प्रतिक्रमणमय है।

(गतांक से आगे....)

पर का मैं कर सकता हूँ, शुभराग से धर्म होता है – ऐसी विपरीत मान्यतारूपी मिथ्यात्वशल्य है, कार्य का फल भोगूँ – वह निदानशल्य है, कपट सेवन करना – वह माया शल्य है। इसप्रकार तीन भाँति की शल्यों को छोड़कर मुनि अपने स्वभाव में ज्ञानदशारूप परिणमते हैं, अतः वे प्रतिक्रमणमय हैं। यहाँ मैं प्रतिक्रमण करनेवाला और यह प्रतिक्रमण की पर्याय – ऐसा कर्त्ता-कर्म का भेद नहीं है, अभेदस्वभाव में ठहर गया है; इसलिए प्रतिक्रमणमय है – ऐसा कहा है।

सच्चा प्रतिक्रमण किसे कहते हैं, उसकी बात चलती है। आत्मा ज्ञानानन्दस्वरूप है, शरीर की क्रिया का आत्मा स्वामी नहीं तथा पुण्य-

पाप, आत्मा का स्वरूप नहीं। आत्मा तो ज्ञानानन्दस्वरूप है और मिथ्यात्व, निदान व माया शल्य से रहित है। ऐसे आत्मा का भान होना, वह मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण है। यहाँ मुनिपने की बात है, इसलिए ऐसे भान उपरान्त नि:शल्यभावरूप परिणति है अर्थात् वह अस्थिरता के – पुण्य-पाप के भावों से रहित होता है। ऐसे महामुनि तपोधन हैं। वे तपरूपी लक्ष्मी के स्वामी हैं और उन्हें ही निश्चयप्रतिक्रमण स्वरूप कहा है।

जो जीव लक्ष्मी तथा परवस्तुओं का स्वामी होता है, वह चोर और अपराधी है। स्वभाव की एकाग्रता को तप तथा वास्तविक लक्ष्मी कहा है। जो जड़लक्ष्मी तथा परवस्तुओं का स्वामी बनता है, वह अपराधी है; कारण कि वह जड़मय परवस्तुओं को अपनी मानता है।

शंका :– व्यवहार से तो लक्ष्मी का स्वामी है न?

समाधान :– व्यवहार से अर्थात् भाषा से बोलने के लिए है – जैसे घी का घड़ा बोला जाता है। वह व्यवहार से भी कब सच्चा कहा जाय? जब जीव ऐसा माने कि लक्ष्मी तो जड़ है, आत्मा उसको एकत्र नहीं कर सकता, उसके ऊपर लक्ष्य जाता है – वह पापभाव है, उसमें तथा लक्ष्मी में सुख नहीं, सुख तो अपने में है – ऐसा माने तो संयोग बताने के लिए व्यवहार से भाषा में यह जीव इतनी लक्ष्मी का स्वामी है – ऐसा बोला जाता है; किन्तु लक्ष्मी मेरी है और उससे सुख है – ऐसा मानकर अन्तर में रोमांच होने लग जाय तो उसको निश्चय-व्यवहार एक हो जाता है, इसलिए वह बड़ा चोर है – अपराधी है – मिथ्यात्वशल्य सहित है। प्रथम तो मिथ्यात्वशल्य समाप्त होना ही चाहिए, तभी धर्मदशा का प्रारम्भ होकर मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण किया – ऐसा कहा जाय।

(क्रमश:)

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

दृशि शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

यह कोई पक्ष की बात नहीं है; बल्कि वस्तुस्वरूप ही ऐसा है।

जिसमें ज्ञेयरूप आकार नहीं है, विशेषपना नहीं है, मात्र सामान्य सत्तामात्र देखने में आती है, उसका नाम दृशिशक्ति है।

भेद करके देखना दृशिशक्ति का कार्य नहीं है, परन्तु अपने आत्मा सहित समस्त पदार्थों का सत्तामात्र अवलोकन करना ही दृशिशक्ति का वास्तविक कार्य है।

यथार्थ परिणमन तभी होता है, जब यह जीव अपने उपयोग को अन्दर में अभेद करके स्वयं को ग्रहण करता है/जानता है।

मात्र पर को जानने के पहले जो पर का सत्तावलोकन होता है, उस दृशिशक्ति के निर्मल परिणमन के साथ अन्य अनन्तगुणों की निर्मलपर्यायें प्रगट होती हैं।

यहाँ मात्र विकार की बात नहीं की है; क्योंकि यथार्थतः विकार जीव के त्रिकालीस्वरूप में है ही नहीं।

इसीप्रकार अनन्तगुणों की जो निर्मलपर्यायें प्रगट होती हैं, उनमें भी विकार का अभाव है। इसप्रकार गुण में स्वभावपने निर्मलपर्याय का सद्भाव व विकारीपर्याय का अभाव - ऐसा अनेकान्त समझना चाहिए।

त्रिकाली द्रव्य के आश्रय से ज्ञानमात्र भाव का परिणमन होते ही

अन्दर में दृशिशक्ति उछलती है, प्रगट होती है - ये सब क्रमबद्ध प्रगट होती है। अर्थात् जिस पर्याय का जो जन्मक्षण होता है, वह पर्याय उसीसमय प्रगट होती है।

जन्मक्षण की चर्चा प्रवचनसार के ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन की १०२वीं गाथा की टीका में आचार्य अमृतचन्द्रस्वामी ने की है। आचार्य जयसेनस्वामी तो उस अधिकार को सम्यग्दर्शन अधिकार कहते हैं। वहाँ ज्ञेय के स्वभाव की अर्थात् छहों द्रव्यों के स्वभाव की बात की है।

जन्मक्षण अर्थात् स्वकाल, द्रव्य की प्रत्येक पर्याय अपने स्वकाल में होती है। इसलिए कहा है कि **क्रमवर्ती पर्याय और अक्रमवर्ती गुणों का समुदाय आत्मा है।**

प्रत्येक शक्ति अपने स्वभाव से ही परिणमन करती है, उसमें व्यवहार, पर और राग का सर्वथा अभाव होता है। यह वस्तुस्वरूप है। 'निश्चय से भी शक्ति प्रगट होती है और व्यवहार से भी शक्ति प्रगट होती है' - ऐसा नहीं है। परन्तु लोगों को सत्यार्थ की खबर नहीं है, अतः इस बात का विरोध करते हैं।

चैतन्य वस्तु आत्मा द्रव्य है, उसमें अनन्त शक्तियाँ हैं, उन शक्तियों का परिणमन पर्याय है। तथा जो वेदन होता है, वह भी पर्याय में होता है। शक्ति तो नित्य ध्रुवस्वरूप है, वह कार्य में नहीं है, कार्य तो पर्याय में होता है। **वेदन/अनुभव तो पर्याय में ही होता है, द्रव्य में नहीं।**

कितने ही लोग ऐसा कहते हैं कि अनुभव करो, अनुभव करो; परन्तु उन्हें अनुभव के वास्तविक स्वरूप की तो खबर भी नहीं है।

निराकुल आनन्द के वेदन का नाम अनुभव है और वह पर्याय में होता है। देखो! पर्याय में दुःख है, द्रव्य और गुण में नहीं।

(क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : प्रश्न : सीमंधर का अर्थ क्या है ? क्या आत्मा सीमंधर है ?

उत्तर : सीमंधर अर्थात् मर्यादावाली वस्तु । प्रभु ! तू मर्यादित है, तेरी सीमा - तेरी मर्यादा यह है कि तू राग में न जावे, राग को न करे, अपने त्रिकाली अकषायी नीराग स्वरूप में ही रहे। अत: मर्यादा का, सीमा का धारक आत्मा स्वयं ही सीमंधर है।

प्रश्न : द्रव्यस्वभाव में विकार है ही नहीं तो कारणपरमात्मा को पापरूपी बहादुर शत्रुसेना का लूटनेवाला क्यों कहा ?

उत्तर : यह तो पर्याय से बात की है। पर्याय में रागादिभाव हैं, वे स्वभावसन्मुख ढलने पर उत्पन्न ही नहीं होते, ऐसी स्थिति में उन्हें नाश किया - ऐसा कथनमात्र किया जाता है। द्रव्यस्वभाव में तो रागादिभाव अथवा सम्यग्दर्शन, सम्यग्चारित्र, केवलज्ञान या सिद्धपर्यायादि कोई भी पर्याय है ही नहीं। संसार-मोक्ष तो सब पर्यायों का खेल है, द्रव्यस्वभाव में ये पर्यायें हैं ही नहीं। त्रिकाली द्रव्यभाव एकरूप है; उसे न तो कुछ ग्रहण ही करना है और न कुछ छोड़ना ही है। ज्ञायकभाव तो शाश्वत ही है। तीन कषायों का अभाव करके अतीन्द्रिय आनन्द का स्वाद लेनेवाले दिगम्बर संतों ने अन्तर की बात अजब-गजब की की है। ऐसी बात दिगम्बर संतों के अतिरिक्त भरतक्षेत्र में अन्यत्र कहीं है ही नहीं। वे कहते हैं कि सभी जीव सुखी होवें, कोई जीव दु:खी न होवे, सभी जीव मुक्त दशा को प्राप्त करें, प्रत्येक आत्मा मुक्तस्वभावी ही है।

प्रश्न : त्रिकाली आत्मद्रव्य के आश्रय से ही धर्म होता है - इसका क्या कारण है?

उत्तर : त्रिकाली आत्मद्रव्य ही मूलवस्तु है, उसी में आनन्द भरा है;

इसलिये त्रिकाली द्रव्य का आश्रय लेने पर पर्याय में आनन्दरूपधर्मदशा प्रगट होती है।

प्रश्न : ध्रुव का मूल्य अधिक है या पर्याय में आनन्द के अनुभव का?

उत्तर : ध्रुव का मूल्य अधिक है। आनन्द की पर्याय तो एक समय की है, जबकि ध्रुव में आनन्द का कोश भरा है।

प्रश्न : यदि द्रव्य की प्रसिद्धि पर्याय से होती हो, तो द्रव्य से पर्याय ऊँची हो गई ?

उत्तर : द्रव्य की प्रसिद्धि भले ही पर्याय करती है, फिर भी पर्याय है तो एक समय की ही न ? द्रव्य तो अनन्त-अनन्त पर्यायों का पिण्ड प्रभु है, उसकी ही महिमा है। यद्यपि एकसमय की पर्याय की भी महिमा है कि वह एकसमय में तीनकाल - तीनलोक के पदार्थों को जानती है - यह सत्य है; तथापि द्रव्य तो उससे अनन्तगुणी पर्यायों का पिण्ड है; इसलिये पर्याय की अपेक्षा द्रव्य की अनन्तगुणी महिमा है। ऐसे द्रव्य की महिमा दृष्टि में आये तो पर्याय में आनन्द का वेदन होवे।

प्रश्न : द्रव्य में पड़ा हुआ आनन्द काम में अर्थात् भोगने में नहीं आता; जबकि पर्याय का आनन्द भोगने में आता है,-ऐसी स्थिति में पर्याय का मूल्य बढ़ा या नहीं?

उत्तर : पर्याय में भोगने में आनेवाला आनन्द एक क्षणवर्ती होता है और द्रव्य तो त्रिकाली आनन्द का पिण्ड है। द्रव्य में से क्षण-क्षण आनन्द का प्रवाह आता है, इसलिये द्रव्य आनन्द का सागर है। आनन्द के सागर का मूल्य अधिक है।

प्रश्न : आप कहते हैं कि ज्ञान की पर्याय ध्रुव को जानती है, ध्रुव स्वयं कुछ नहीं जानता; तो क्या ध्रुव अन्धा है ?

उत्तर : ध्रुव अन्धा नहीं है, बल्कि महाप्रभु है। ध्रुव जानने की अन्वयशक्तियों का महापिण्ड प्रभु है। पर्याय व्यक्त है - प्रगट है; अत: ध्रुव को जानती है।

समाचार दर्शन -

अनेक स्थानों पर बाल संस्कार शिविर संपन्न

ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर देशभर में अनेक स्थानों पर ग्रुप शिविर एवं बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व तत्त्वप्रचार हो रहा है। सभी स्थानों पर जिनेन्द्र-पूजन, प्रवचन, बाल कक्षाएं, जिनेन्द्र-भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है। इसी क्रम में कुछ स्थानों के शिविरों का विवरण यहाँ दिया जा रहा है, शेष आगामी अंकों में दिया जायेगा।

● **इन्दौर (म.प्र.) :** यहाँ सन्मति स्कूल नौलखा में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा दिनांक 28 अप्रैल से 5 मई तक 19वें जैनत्व बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर टोडरमल महाविद्यालय जयपुर, बांसवाड़ा विद्यालय, कोटा विद्यालय एवं आत्मार्थी विद्यालय दिल्ली के विद्वानों के अतिरिक्त पण्डित सौरभजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री का समागम प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद एवं पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ का भी विशेष सहयोग रहा। शिविर में लगभग 650 बच्चों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

● **देवलाली-नासिक (महा.) :** यहाँ श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 8 से 14 मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित अनिलजी दहिसर, पण्डित अभयजी खैरागढ, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित देवांगजी शास्त्री, पण्डित मंथनजी शास्त्री, पण्डित उर्विशजी शास्त्री, ब्र.चेतनाबेन, जिनल बेन, स्वस्ति जैन जबलपुर, श्रुति खैरागढ आदि का समागम प्राप्त हुआ। शिविर का निर्देशन पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर ने किया। शिविर में जिनेन्द्र-पूजन, कक्षाएं, गुरुदेव का प्रवचन, विरागजी द्वारा पौराणिक कथा, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि कार्यक्रम हुये, जिसमें मुम्बई, जबलपुर, जलगांव, औरंगाबाद, हैदराबाद, मालेगांव आदि स्थानों के लगभग 300 बच्चों ने लाभ लिया।

● **गुना (म.प्र.) :** यहाँ नई सड़क स्थित श्री वर्धमान दिगम्बर जैन मंदिर वीतराग विज्ञान भवन में दिनांक 1 से 10 मई तक 18वाँ आध्यात्मिक बाल/युवा संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित अशोकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अश्विनजी नानावटी नौगांव, पण्डित शनिजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री कोटा का समागम प्राप्त हुआ। साथ ही अनेक स्थानीय विद्वानों का भी समागम प्राप्त हुआ। शिविर में पूजन प्रशिक्षण, द्रव्य-गुण-पर्याय, ध्यान, चार अभाव, भक्तामर स्तोत्र आदि विषयों पर कक्षाएं ली गईं, जिनका 130 बच्चों के अतिरिक्त 150 साधर्मियों ने लाभ लिया।

● **ग्वालियर (म.प्र.) :** यहाँ अ.भा. जैन युवा फैडरेशन द्वारा दिनांक 7 से 13 मई तक

नैतिक शिक्षा समर कैम्प का आयोजन हुआ, जिसमें प्रतिदिन प्रार्थना, पूजन, बाल कक्षाएं, कण्ठपाठ, जिनेन्द्र-भक्ति, ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि गतिविधियाँ संपन्न हुईं। शिविर में पण्डित अजितजी अचल, पण्डित अविरलजी शास्त्री, पण्डित अमनजी शास्त्री, श्रीमती मंजू दीदी, श्रीमती आरती दीदी, रश्मि, निकिता, श्रद्धा, आकांक्षा आदि के द्वारा धार्मिक कक्षाएं ली गईं। शिविर का निर्देशन पण्डित शुद्धात्मजी शास्त्री द्वारा किया गया।

ग्रीष्मकालीन ग्रुप शिविर संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ ग्रीष्मकालीन अवकाश के समय पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन एवं मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 9 मई तक राजस्थान के 15 और मध्यप्रदेश के 45 - इसप्रकार कुल 60 स्थानों पर बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर लगभग 80 विद्वानों द्वारा 4000 से अधिक बच्चों एवं 1500 से अधिक साधर्मियों को धर्मलाभ मिला।

शिविर में श्री प्रेमचंदजी बजाज, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित संजयजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर का विशेष मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त हुआ। शिविर के संयोजक मयंकजी शास्त्री बण्डा, देवांशुजी शास्त्री व अनुजजी शास्त्री खड़ैरी थे तथा समन्वयक गोम्मटेशजी शास्त्री, अभिनयजी शास्त्री, निलयजी शास्त्री, नीतेशजी शास्त्री, पीयूषजी शास्त्री, चेतनजी शास्त्री, चैतन्यजी शास्त्री थे।

बाल संस्कार शिविर एवं शिलान्यास समारोह संपन्न

सनावद (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन परमागम ट्रस्ट एवं दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल द्वारा दिनांक 19 से 23 अप्रैल तक 7वाँ बाल-युवा संस्कार शिविर लगाया गया। इस अवसर पर पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित सम्मेदजी सिद्धार्थी टीकमगढ एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री बण्डा ने बालकों की कक्षा तथा विदुषी राजकुमारीजी दिल्ली व विदुषी प्रमिलाजी इन्दौर ने महिलाओं की कक्षा ली। शिविर में श्री चौबीस तीर्थंकर विधान, पार्श्वनाथ व महावीर पंचकल्याणक विधान भी हुये।

इसी प्रसंग पर नवनिर्मित श्री 1008 महावीर स्वामी जिनमंदिर के अन्तर्गत 27 वेदियों एवं 4 जिनालयों का भव्य शिलान्यास समारोह भी आयोजित हुआ। कार्यक्रम में इन्दौर, मुम्बई, खण्डवा, अहमदाबाद, उज्जैन, रतलाम, बड़नगर, जावरा, डासाला, मलकापुर, बेडीया, बड़वार, उदयपुर, जबलपुर आदि स्थानों से लगभग 700 साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया। महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर (अध्यक्ष-दिगम्बर जैन महासमिति) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री संजयजी कागदी इन्दौर, श्री अनिलजी पाटोदी उपस्थित थे।

उपकार दिवस सानन्द संपन्न

● **जयपुर (राज.) :** यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 12 मई को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 130वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर प्रात: जिनेन्द्र पूजन के उपरांत डॉ. शांतिकुमारजी पाटील द्वारा समयसार पर प्रवचन का लाभ मिला। प्रवचन के पश्चात् आयोजित सभा में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. अरुणजी बंड, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', डॉ.संजयजी शास्त्री दौसा, पण्डित सोनूजी शास्त्री आदि विद्वत्गणों ने अपने विचार व्यक्त किये। साथ ही पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री ने कविता पाठ किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण देवयश जैन एवं संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

● **इन्दौर (म.प्र.) :** यहाँ रविन्द्र नाट्य गृह में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट व मुमुक्षु समाज द्वारा दिनांक 5 मई को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 130वीं जन्मजयंती मनाई गई।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के जीवन पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। तत्पश्चात् ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा द्वारा गुरुदेवश्री के जीवन संबंधित उद्बोधन हुए, जिसमें गुरुदेवश्री का जैनधर्म को योगदान, अध्यात्म की गहराई, अनेक प्रसंगों एवं संस्मरणों पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल, पण्डित ऋषभजी इंजी., पण्डित पदमजी गंगवाल आदि स्थानीय विद्वानों के अतिरिक्त श्री अशोकजी जैन 'अरिहंत केपिटल' मुम्बई, डॉ. अशोकजी जैन, श्री अशोकजी बड़जात्या, श्री सी.के. दोशी इन्दौर, श्री अशोकजी जैन 'सुभाष ट्रांसपोर्ट' भोपाल, श्री कमलजी बोहरा कोटा आदि महानुभाव उपस्थित थे। पाठशाला के बच्चों द्वारा भी प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन ट्रस्ट के अध्यक्ष विजयजी बड़जात्या एवं राजेशजी काला ने किया एवं आभार प्रदर्शन कोषाध्यक्ष पदमजी पहाड़िया ने किया।

इस प्रसंग पर जैन प्रश्नोत्तरी विज्ञान वाटिका प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण भी हुआ। विज्ञान वाटिका के पंचम पुष्प में 5000 प्रतियोगियों ने भाग लिया, जिसमें से श्रीमती प्रगति जैन-राजेश जैन छिन्दवाड़ा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर 4 लोगों को एवं तृतीय स्थान पर 6 लोगों को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त 50 सांत्वना पुरस्कार, 28 मूलगुण पुरस्कार एवं 13 चारित्र पुरस्कार भी वितरित किये गये।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री अशोकजी बड़जात्या, मुख्य अतिथि इंजी. अनिलजी उज्जैन एवं विशिष्ट अतिथि श्री कमलजी बोहरा कोटा थे। इसके अतिरिक्त श्री पदमजी पहाड़िया, पण्डित नागेशजी पिड़ावा, पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित संजीवजी दिल्ली, श्री अमितजी अरिहंत मड़ावरा आदि महानुभावों के साथ साथ सकल मुमुक्षु समाज, युवा फैडरेशन के पदाधिकारीगण एवं दिल्ली युवा फैडरेशन उस्मानपुर के सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही।

ऑस्ट्रेलिया में धर्म प्रभावना

सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) : यहाँ सिडनी जैन मण्डल एज्युकेशन सेन्टर के तत्त्वावधान में **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** द्वारा दिनांक 18 से 25 अप्रैल तक अपूर्व ज्ञानगंगा प्रवाहित हुई।

इसी बीच एक 4 दिवसीय आवासीय शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें घर-परिवार, व्यापार आदि की चिन्ताओं और विकल्पों से मुक्त होकर सभी ने अध्यात्म रस का पान किया। प्रतिदिन भोजन के समय को छोड़कर प्रात: से रात्रि तक लगभग 6-7 घण्टे संजीवकुमारजी गोधा के इष्टोपदेश ग्रंथ पर आद्योपांत मार्मिक प्रवचन एवं शंका-समाधान तथा सायंकाल भक्ति संध्या आदि कार्यक्रम आयोजित हुये। समस्त कार्यक्रमों का संचालन डॉ. मनीषजी जैन ने किया। इस प्रसंग पर मण्डल अध्यक्ष श्री पंकजजी जैन के सान्निध्य में उनकी संपूर्ण टीम का सक्रिय सहयोग रहा। शिविर के अतिरिक्त भी श्रावक के अष्ट-मूलगुण, षट् आवश्यक व तीन लोक विषय पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

विचार गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : दिनांक 11 मई को राजस्थान जैन साहित्य परिषद् जयपुर और श्री दिगम्बर जैन मंदिर जवाहरनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में '**कर्म सिद्धांत**' विषय पर विचार गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में अन्तरराष्ट्रीय युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला

गोष्ठी के आरंभ में स्वागत उद्बोधन परिषद् के अध्यक्ष श्री महेशजी चांदवाड ने दिया। संरक्षक प्रो.नवीनजी बज ने गतिविधियों की जानकारी दी एवं मंत्री सी.ए. शांतिलालजी गंगवाल ने आगामी श्रुतपंचमी समारोह की जानकारी उपलब्ध करायी। गोष्ठी में सैंकड़ों साधर्मियों ने लाभ लिया। अन्त में गोष्ठी के आयोजक डॉ. एस.के. जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच संचालन श्री सुदर्शनजी पाटनी ने किया।

पोन्नूरमलै में शिविर संपन्न

पोन्नूरमलै (तमिलनाडु) : चेन्नई से 120 कि.मी. दूर आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूरमलै में दिनांक 27 से 31 मार्च तक जिनदेशना आध्यात्मिक शिक्षण शिविर रत्नत्रय विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित चेतनभाई राजकोट, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित अशोकजी वैभव छिन्दवाड़ा, पण्डित विमलकुमारजी छिन्दवाड़ा द्वारा प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

स्वाध्याय हॉल का उद्घाटन हुआ

सांगली (महा.) : यहाँ दक्षिण प्रांत शास्त्री स्नातक परिषद् द्वारा दिनांक 14 अप्रैल, 2019 को वीतराग विज्ञान स्वाध्याय हॉल का उद्घाटन हुआ।

हॉल के उद्घाटनकर्ता न्यायमूर्ति भालचंद्रजी वग्यानी थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुरेशजी पाटील (भूतपूर्व मेयर-सांगली एवं श्रवणबेलगोला कमेटी के अध्यक्ष) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री बी.टी.बेडगे (संचालक-बाहुबली आश्रम, बाहुबली), डॉ. किरणभाई शहा पुणे, श्री उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई (ट्रस्टी-देवलाली ट्रस्ट), श्री सनत्कुमारजी आरवाडे सांगली, श्री शांतिनाथजी कल्पवृक्ष जयसिंहपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर शांति विधान का आयोजन, रथयात्रा का आयोजन, मराठी पद्यानुवाद सहित द्रव्यसंग्रह का विमोचन (पण्डित प्रकाशजी देशमाने, सांगली द्वारा संपादित), प्रोजेक्टर स्क्रीन का उद्घाटन एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग 500 साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया।

विधि-विधान के कार्य पण्डित प्रफुल्लजी शास्त्री द्वारा पण्डित रोहितजी सिद्धनाले शास्त्री जयसिंहपुर के सहयोग से संपन्न हुये। **– महावीर पाटील, सांगली**

सिद्धचक्र महामंडल विधान संपन्न

टीकमगढ (म.प्र.) : यहाँ श्री 1008 सीमंधर जिनालय ज्ञानमंदिर की 15वीं वर्षगांठ के अवसर पर दिनांक 13 से 20 मार्च तक अष्टाह्निका पर्व में श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन स्व. श्रीमती पुष्पादेवी ठगन की भावनानुसार श्री सनतकुमारजी ठगन परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर टोडरमल महाविद्यालय के उपप्राचार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा ग्रंथाधिराज समयसार एवं विधान की जयमाला पर प्रवचनों का लाभ मिला एवं विदुषी प्रतीति पाटील द्वारा कक्षाएं ली गईं।

कार्यक्रम में '**चलो सिद्धों की छांव तले**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ.शांतिकुमारजी पाटील ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुरेशचंदजी टीकमगढ रहे। इसमें स्थानीय विद्वानों ने भी अपने वक्तव्य दिये। कार्यक्रम का संचालन पण्डित मयंकजी शास्त्री ठगन टीकमगढ ने किया

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित मधुवनजी मुजफ्फरनगर एवं पण्डित सम्मेदजी सिद्धार्थी टीकमगढ द्वारा संपन्न हुये।

शोक समाचार

(1) दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षक, आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अनन्य भक्त, श्री गजपंथा सिद्धक्षेत्र व श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के अध्यक्ष, श्री सैतवाल दिगम्बर जैन संस्था के मार्गदर्शक व कई अन्य संस्थाओं के आधार स्तम्भ **गजपंथा-नासिक (महा.) निवासी ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर** का दिनांक 10 मई को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 11 मई को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सान्निध्य में श्रद्धांजलि सभा हुई, जिसमें डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने धन्यकुमारजी का परिचय देते हुए श्रद्धांजलि समर्पित की। श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्रीमती कमला भारिल्ल ने भी श्रद्धांजलि दी। सभा में श्री सुशीलजी गोदिका के अतिरिक्त अनेक महानुभाव उपस्थित थे। अंत में नौ बार णमोकार मंत्रपूर्वक सभा समाप्त हुई।

(2) जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती सूरजदेवी सेठी धर्मपत्नी स्व. श्री जमनालालजी सेठी का दिनांक 24 अप्रैल को 92 वर्ष की आयु में तत्त्वचर्चा करते हुए शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री कैलाशचंदजी, प्रकाशचंदजी सेठी की माताजी एवं टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक संजयजी सेठी जयपुर की दादीजी थीं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 11000/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) खनियांधाना (म.प्र.) निवासी श्रीमती प्रभादेवी जैन धर्मपत्नी श्री सुरेशचंदजी जैन साव (माताश्री संजय शास्त्री, राजीव, अभिषेक) का दिनांक 17 मार्च को समता व वैराग्यभाव सहित देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली व अचलजी शास्त्री खनियांधाना की चाचीजी थीं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

(4) बांसवाड़ा (राज.) निवासी श्री जयन्तीलालजी भरडा का दिनांक 10 मई को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित रितेशजी शास्त्री, डडूका के पिताजी थे।

(5) फिरोजाबाद (उ.प्र.) निवासी श्री अरुणकुमार जैन (पोद्दार) का दिनांक 16 अप्रैल को 68 वर्ष की आयु में दुर्घटनावश आकस्मिक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक नवीनजी शास्त्री (पोद्दार) जयपुर के पिताजी थे।

(6) शिकोहाबाद (उ.प्र.) निवासी श्रीमती मधुर जैन धर्मपत्नी स्व. जयकुमारजी जैन एडवोकेट का दिनांक 25 अप्रैल को 65 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में आपके सुपुत्र श्री मनोजजी, विनीतजी एवं रजनीशजी की ओर से संस्था हेतु 501/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा
श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर में

42वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(शुक्रवार, दिनांक 2 अगस्त से रविवार 11 अगस्त, 2019 तक)

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

-: संपर्क सूत्र :-
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर,
जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

19 मई से 5 जून	सूरत	प्रशिक्षण शिविर
7 जून से 6 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
2 से 11 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
26 अगस्त से 2 सितम्बर	मुम्बई (अध्यात्म स्टडी सर्किल)	श्वेताम्बर पर्यूषण

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -

वेबसाईट - **www.vitragvani.com**

संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

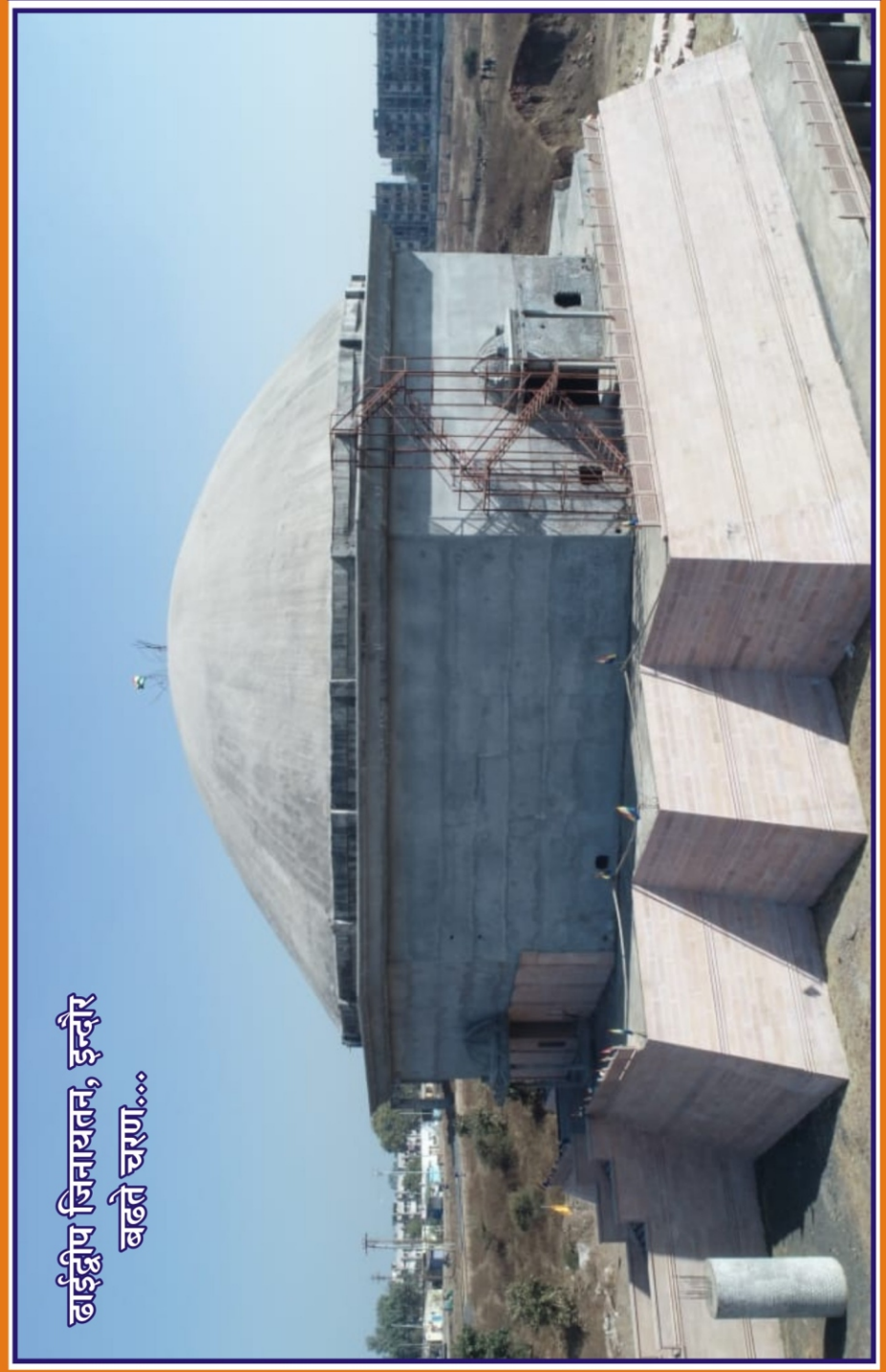

R.N.I. No. 38278/83 ***Postal Regd. No. JaipurCity/421/2018-20***

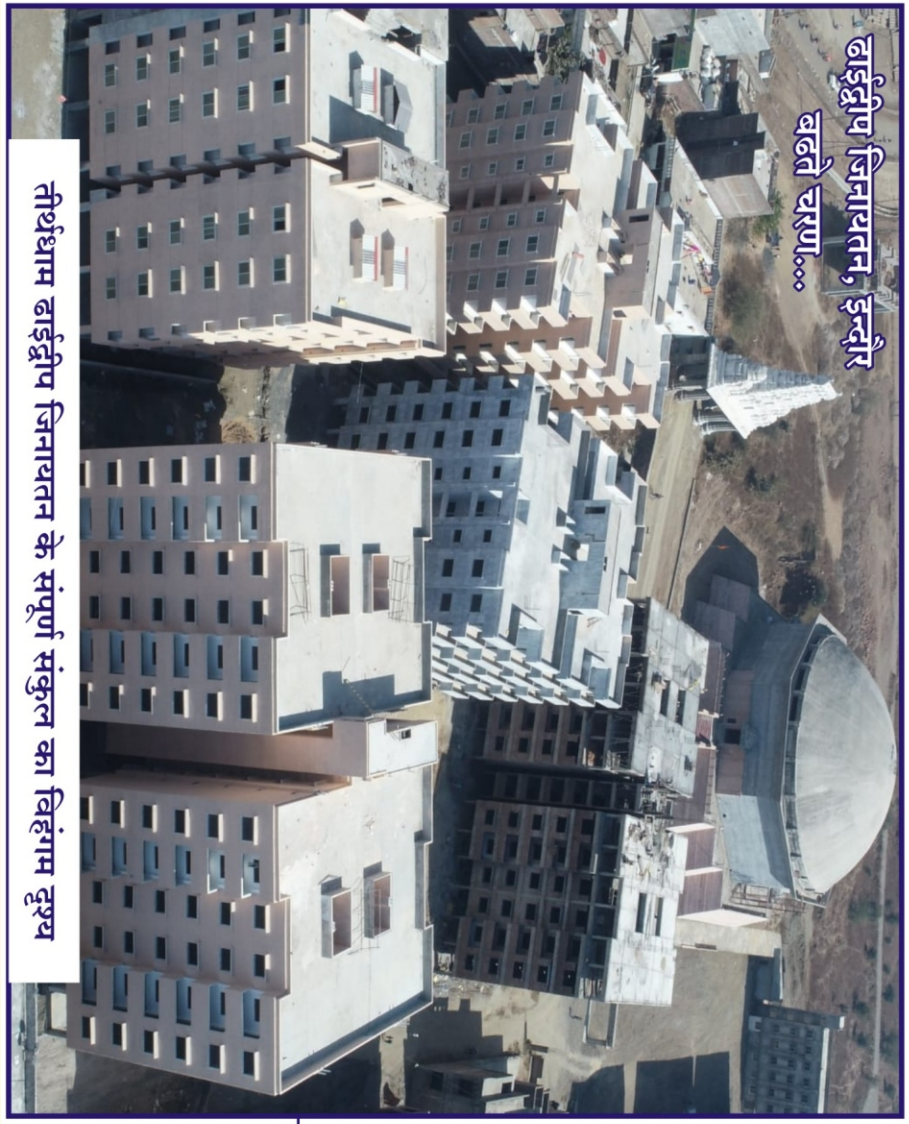

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**